Self Respect

19-07-2014

✓भल ड्रामा के प्लैन अनुसार स्वर्ग की स्थापना बाप कर रहे हैं परन्तु बाप कहते हैं मैं स्वर्ग को देखता नहीं हूँ । जिन्हों के लिए है वही देख सकते हैं । तुमको पढ़ाकर फिर मैं तो कोई शरीर धारण करता ही नहीं हूँ । तो बिगर शरीर देख कैसे सकूँगा । ऐसे नहीं, जहाँ-तहाँ मौजूद हूँ । सब कुछ देखते हैं । नहीं, बाप सिर्फ देखते हैं तुम बच्चों को, जिनको गुल-गुल (फूल) बनाकर याद की यात्रा सिखलाते हैं ।

- ✓सच बोलने वाला, सचखण्ड स्थापन करने वाला वही है । भारत सचखण्ड था, वहाँ सब देवी-देवता निवास करते थे । तुम अभी मनुष्य से देवता बन रहे हो । तो बच्चों को समझाते हैं-सच्चे बाप के साथ अन्दर- बाहर सच्चा बनना है ।

- ✓बच्चे समझ गये हैं बाप से स्वर्ग का वर्सा मिलता है । स्वर्ग कैसे रचते हैं? याद की यात्रा और ज्ञान से । भक्ति में ज्ञान होता नहीं । ज्ञान सिर्फ एक ही बाप देते हैं ब्राह्मणों को । ब्राह्मण चोटी हैं ना । अभी तुम ब्राह्मण हो फिर बाजोली खेलेंगे । ब्राह्मण देवता क्षत्रिय.....इसको कहा जाता है विराट रूप । विराट रूप कोई ब्रह्मा, विष्णु, शंकर का नहीं कहेंगे ।

✓बाप ब्रह्मा तन में आते हैं-यह तो कोई जानता नहीं । ब्राह्मण कुल ही सर्वोत्तम कुल है, जबकि बाप आकर पढ़ाते हैं । बाप शूद्रों को तो नहीं पढ़ायेंगे ना । ब्राह्मणों को ही पढ़ाते हैं । पढ़ाने में भी टाइम लगता है, राजधानी स्थापन होनी है । तुम ऊंच ते ऊंच पुरूषोत्तम बनो ।

- ✓ यह भी बताया है जिन्होंने पहले-पहले भक्ति की है, वही ज्ञान में तीखे जायेंगे । भक्ति जास्ती की है तो फल भी उनको जास्ती मिलना चाहिए । कहते हैं भक्ति का फल भगवान् देते हैं, वह है ज्ञान का सागर । तो जरूर ज्ञान से ही फल देंगे । भक्ति के फल का किसको भी पता नहीं है । भक्ति का फल है ज्ञान, जिससे स्वर्ग का वर्सा सुख मिलता है । तो फल देते हैं अर्थात् नर्कवासी से स्वर्गवासी बनाते हैं एक बाप ।

- ✓नास्तिक उनको कहा जाता है जो न बाप को, न रचना के आदि-मध्य- अन्त को, न डयुरेशन को जानते हैं । इस समय तुम आस्तिक बने हो । वहाँ यह बातें ही नहीं ।
- ✓आत्मायें परमात्मा अलग रहे बहुकाल..... अलग होती हैं, यहाँ आती हैं पार्ट बजाने । तुम पूरे 5 हजार वर्ष अलग रहे हो । तुम मीठे बच्चों को आलराउण्ड पार्ट मिला है इसलिए तुमको ही समझाते हैं । ज्ञान के भी तुम अधिकारी हो । सबसे जास्ती भक्ति जिसने की है, ज्ञान में भी वही तीखे जायेंगे, पद भी ऊंच पाएंगे ।

✓बाप कितना दूर से आते हैं । उनका घर है परमधाम । परमधाम से आयेंगे तो जरूर बच्चों के लिए सौगात ले आयेंगे । हथेली पर बहिश्त सौगात में ले आते हैं । बाप कहते हैं सेकण्ड में स्वर्ग की बादशाही लो । सिर्फ बाप को जानो । सभी आत्माओं का बाप तो है ना । कहते हैं मैं तुम्हारा बाप हूँ ।

✓ बाप कहते हैं तुम सब मनुष्य मत पर थे, अभी बाबा तुम्हें श्रीमत दे रहे हैं । शास्त्र लिखने वाले भी मनुष्य हैं । देवतायें तो लिखते नहीं, न पढ़ते हैं ।

✓शास्त्रों में सब कर्मकाण्ड लिखा हुआ है । यहाँ वह बात है नहीं । तुम देखते हो बाबा ज्ञान देते हैं । भक्ति मार्ग में तो हमने शास्त्र बहुत पढ़े हैं । कोई पूछे तुम वेदो-शास्त्रों आदि को नहीं मानते हो? बोलो, जो भी मनुष्य मात्र हैं उनसे ज्यादा हम मानते हैं । शुरू से लेकर अव्यभिचारी भक्ति हमने शुरू की है । अभी हमको ज्ञान मिला है । ज्ञान से सद्गति होती है फिर हम भक्ति को क्या करेंगे ।

✓वरदान:सर्वशक्तिमान बाप को कम्बाइन्ड रूप में साथ रखने वाले सफलता-मूर्त भव !

✓अच्छा! मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात- पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग । रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते ।